IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

स्वामी विवेकानंद और बालिका शिक्षा

अपराजिता भारती

शोधार्थी (शिक्षाशास्त्र)

राधा गोविंद विश्वविद्यालय, रामगढ़

सारांश

शिक्षा ज्ञानार्जन का सर्वोतम साधन है। शिक्षा वह प्रकाश है जिसके द्वारा एक व्यक्ति की समस्त शक्तियों का विकास होता है। किसी भी देश, समाज और व्यक्ति के शक्ति तथा विकास का मूल साधन शिक्षा ही है, साथ ही साथ किसी भी राष्ट्र और या समाज का विकास इस बात पर निर्भर करता है कि उस राष्ट्र और समाज में महिला शिक्षा की क्या स्थिति है? अर्थात जिस देश में बालिका शिक्षा की स्थिति जितनी ऊँची होगी वह देश उतना ही ताकतवर होगा। बालिकाओं को उनके अधिकारों तथा कर्तव्यों के प्रति जागरूक बनाने, देश और परिवार को आर्थिक संपन्नता प्रदान करने तथा प्रजातंत्र को मजबूत बनाने के लिए बालिका शिक्षा अति आवश्यक है। हमारे देश में प्रत्येक काल में ऐसे अनेक संत, समाज सुधारक तथा शिक्षाशास्त्री हुए जिन्होंने अपने शैक्षिक विचारों द्वारा देश का मार्गदर्शन किया। इन शिक्षाशास्त्रीयों ने बालिका शिक्षा के संबंध में भी अपने प्रभावशाली विचार प्रकट किए। इन्हीं संतों में एक महान ज्ञानी, युग प्रर्वतक संत स्वामी विवेकानंद है, जिन्होंने बालिका शिक्षा के संबंध में ऐसे विचार प्रकट किए जो वर्तमान समय में भी काफी प्रासंगिक है।

तकनीकी शब्द–स्वामी विवेकानंद, शिक्षा, बालिका शिक्षा

प्रस्तावना :–

भारत की पवित्र धरती पर समय–समय पर अनेक महापुरूष प्रकट होते रहे है। जिनमें महान तेजस्वी, प्रतिभावान, ओजस्वी, राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय मंच पर अपनी साधुता, राष्ट्रप्रेम, सम्पूर्ण मानव–जाति के कल्याण, आध्यात्मिक उत्थान तथा पूर्व एवं पश्चिम के मध्य भाईचारे के संदेश के लिए प्रसिद्ध स्वामी विवेकानंद को किसी परिचय की जरूरत नहीं है। ये भारत के महान विचारक, आध्यात्मिक गुरू, दार्शनिक और शिक्षाशास्त्री थे। वे सभी तुलनाओं से परे हैं। स्वामी विवेकानंनद के बचपन का नाम नरेन्द्रनाथ या नरेन था। कुशाग्र बुद्धि और चंचल स्वभाव के बालक नरेन्द्रनाथ का जन्म 12 जनवरी 1863 ई0 को कोलकाता में हुआ था। उनके पिता का नाम विश्वनाथ दत तथा माता का नाम भुवनेश्वरी देवी था। इनकी माता जी बहुत बुद्धिमान, गुणवंती और धर्मपरायण महिला थी, जिनके व्यक्तित्व का अमिट प्रभाव बालक नरेन्द्र पर पड़ा। बचपन से ही पूजा पाठ, वेदों के अध्ययन तथा ध्यानमग्न हो जाने में इनकी गहरी रूचि थी। इन सब गुणों के कारण ही ये नरेन्द्रनाथ से स्वामी विवेकानंद बन गए।

स्वामी विवेकानंद के समय हमारा देश न सिर्फ अंग्रेजों का गुलाम था बल्कि उस समय भारत अनेक सामाजिक कुरीतियों का भी गुलाम था, देश में महिलाओं की स्थिति अत्यन्त दयनीय थी। बाल विवाह, पर्दा प्रथा, बालिकाओं के साथ भेदभाव चरम पर था। स्वामी जी इन सबका बडा कारण अशिक्षा को मानते थे। स्वामी जी शिक्षा के विभिन्न पक्षों पर अपना विस्तृत विचार प्रस्तुत किए। बालिका शिक्षा के संबंध में स्वामी विवेकानंद ने जो विचार प्रस्तुत किया था वह

आधुनिक युग में भी काफी प्रासंगिक और मान्य है। इस शोधपत्र में स्वामी जी के बालिका शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन किया गया है।

स्वामी जी के मन में भारतीय महिलाओं के प्रति अपार स्नेह और आदर की भावना थी, वह भारत की महिलाओं में माता सीता की छवि देखते थे। उनके समय महिला प्रताड़ना चरम पर थी उन्हें शिक्षा से दूर रखा गया था। वे इससे काफी दुखी थे और वे बालिका शिक्षा और उनकी स्वतंत्रता के प्रबल समर्थक थे। स्वामी जी बालिकाओं को शिक्षा द्वारा आत्मनिर्भर बनाना चाहते थे। उनका स्पष्ट मानना था कि बिना बालिकाओं को शिक्षित किए राष्ट्र और समाज का कल्याण हो ही नही सकता।

प्रबुद्ध भारत समाचार पत्र के एक संपादक ने स्वामी विवेकानंद से भारतीय नारी की वर्तमान अवस्था उनकी शिक्षा तथा उनके भविष्य के बारे में उनके मत को जानने की कोशिश की थी। स्वामी विवेकानंद ने संपादक से भारतीय महिलाओं के बारे में विस्तार से बात की थी। बालिका शिक्षा के संबंध में उनके विचार काफी उदार थे। वे कहते थे बालकों के समान बालिकाओं को भी शिक्षा मिलनी चाहिए उनका कहना था स्त्री और पुरूष एक पक्षी के दो पंख है और किसी पक्षी के लिए एक पंख पर उड़ना संभव नहीं है।

स्वामी जी ने विश्व भ्रमण किया था। वह पूर्व और पश्चिम दोनों जगहों की लड़कियों को एक समान सम्मान देते थे, लेकिन उनका मानना था कि भारतीय बालिकाओं में सदगुण अन्य किसी भी देश की लड़कियों से अधिक है। जब उनसे पत्रकार ने पूछा कि क्या आप भारतीय महिलाओं की वर्तमान दशा से संतुष्ट है? क्या भारत देश में जन्म लेना ही उनके लिए काफी है? क्या उनके सामने कोई समस्या नही है, तब स्वामी जी ने कहा उनके सामने बहुत सारी समस्याएं है जो कि काफी जटिल है, परन्तु इनमें एक भी समस्या ऐसी नहीं है जो शिक्षा द्वारा हल नहीं किया जा सके। हमें उन्हें शिक्षित करने की आवश्यकता है परन्तु शिक्षा सच्ची और साकारात्मक होनी चाहिए।

जब संपादक ने पूछा कि सच्ची शिक्षा क्या है? तब स्वामी विवेकानंद ने कहा कि सच्ची शिक्षा वह है, जिसके द्वारा चरित्र का निर्माण होता है, मस्तिष्क की शक्ति बढती है, बुद्धि का विकास होता और मनुष्य आत्मनिर्भर बनता है।

स्वामी जी का मानना था कि जिस देश ने माता सीता को जन्म दिया जहाँ अहिल्याबाई, मीराबाई मैत्रेयी, संघमित्रा, लीला जैसी विदुषी महिलाएं है, वहाँ बालिकाओं के अनादर का कोई प्रश्न ही नही है। स्वामी जी के अनुसार भारतीय संस्कृति में नारी पुजनीय है। वे चाहते थे कि भारतीय बालिकाओं को ऐसी शिक्षा दी जाए कि जिससे उनकी मानसिक शक्ति सुदढ हो ताकि वे किसी विषय पर स्वयं विचार कर स्वतंत्रतापूर्वक निर्णय ले सके। वे चाहते थे भारत की बालिकाओं को ऐसी शिक्षा दी जाए जिससे वे निर्भय होकर भारत के प्रति अपने कर्तव्यों को निभा सके।

स्वामी जी ने विश्व भ्रमण के दौरान देखा कि पश्चिम की महिलाएं काफी आधुनिक, शिक्षित तथा स्वतंत्र है। उनकी बौद्धिक प्रगति काफी अधिक है उनकी तुलना में भारतीय बालिकाओं की स्थिति काफी दयनीय है। उन्होंने कहा कि प. देशों में बाल विवाह नहीं होते। वहाँ के विद्यालय छात्राओं से भरे होते हैं। उन्होंने कहा कि अमेरिका की महिलाएं जितनी सभ्य तथा शिक्षित होती है उतना मैंने कही नहीं देखा है। वे जीवकोपार्जन करती, गाडी चलाती है, पुरूषों के तरह सम्मान पूर्वक जीवन जीती है। इसलिए अमेरिका एक शक्तिशाली तथा स्वतंत्र राष्ट्र है। उनके अनुसार अमेरिकी महिलाएं जिस तरह से शिक्षित है उसकी कल्पना अधिकांश भारतीय महिला कर भी नही सकती है। स्वामी जी जब अमेरिका गए तो वहां की महिलाएं उनके रहने खाने, व्याख्यान की व्यवस्था करने में उनकी काफी सहायता की थीं उन्हें इसके लिए किसी का आदेश नहीं लेना पडता था। वे अपना निर्णय स्वंय लेती थी। विवेकानंद के अनुसार एक हमारे देश की महिलाएं है जिन्हें अकेले कही भी जाने नही दिया जाता है और वे कही भी जाने से डरती है। क्या हम अपने देश की लडकियों के लिए ऐसी शिक्षा की व्यवस्था नहीं कर सकते? जब प्रकाशक ने उनसे कहा कि इस कार्य में तो बहुत देर लगेगी तब स्वामी जी ने कहा जो भी हो हमें इस पुनीत कर्तव्य को जल्दी से जल्दी शुरू करना होगा। यद्यपि

स्वामी जी पश्चिम की लड़कियों के बौद्धिक प्रगति से तो काफी प्रभावित थे लेकिन वे वहाँ के जीवनशैली को खास पसंद नहीं करते थे। उन्हें तो भारतीय महिलाओं के परम्परागत गुण, लज्जा, सहनशीलता, त्याग, बलिदान आदि काफी पसंद थे। वे भारतीय बालिकाओं के इन गुणों को शिक्षा द्वारा बरकार रखते हुए उन्हें निडर तथा आत्मनिर्भर बनाना चाहते थे। इसलिए वे भारतीय छात्राओं में इन सदगुणों के साथ पश्चिम की स्वतंत्रता बौद्धिकता आत्मनिर्भरता एवं गतिशीलता का संगम चाहते थे।

एक बार उनके एक शिष्य ने कहा कि आजकल छात्राओं को किस प्रकार की शिक्षा देनी चाहिए तो स्वामी जी ने कहा बालिकाओं को धर्मशास्त्र, शिल्प, गृहकार्य, इतिहास, कला, साहित्य, संस्कृत, व्याकरण, गृहस्थ जीवनयापन के सारे कार्य (सिलाई, शिशुपालन, गायन) स्वास्थ्य, विज्ञान और अंग्रेजी की शिक्षा देनी चाहिए। स्वंय स्वामी जी की मां भुवनेश्वरी देवी खाली समय में सिंलाई, गायन आदि कार्य करती थी। उनका कहना था हमें विदेशों से ज्ञान लेने की जरूरत है, क्योंकि पश्चिम शिक्षा जीवकोपार्जन के लिए तैयार करती है और हमें आधुनिक बनाती है। लेकिन हमारे पास उन्हें (पश्चिमी देशों) देने के लिए बहुत कुछ है। वे कहते थे जब स्त्रियों शिक्षित होगी तभी उनके संतान द्वारा देश का कल्याण होगा और राष्ट्र में विद्या, भक्ति और शक्ति का बोलबाला होगा। स्वामी विवेकानंद के जन्मजात गुणों को निखारने में उनकी माँ की महत्वपूर्ण भूमिका थी, उन्होंने स्वंय कहा था कि आज मैं जो कुछ भी हूँ अपनी माँ के कारण ही हूँ।

विवेकानंद उस समय समाज में बडे पैमान पर प्रचलित बालक बालिकाओं में लैंगिंक अंतर को अस्वीकार करते थे। वे कहते थे कि किसी भी शास्त्र में यह नहीं कहा गया कि बालिकाएँ ज्ञान की अधिकारिणी नहीं हो सकती। उनके अनुसार प्राचीन भारत में तो ऐसा नहीं था। गुरूकुल में बालक बालिकाएँ साथ पढते थे, धर्मशास्त्र के जटिल बातों पर गार्गी ने याज्ञवलक्य से शास्त्रार्थ किया था। महिलाएँ भी सन्यासी होती थी। जब उस समय लैंगिक भेद नहीं था, शिक्षा ग्रहण करने का अधिकार छात्र–छात्राएं दोनों को था, तो वर्तमान समय में यह अधिकार बालिकाओं से छीनने का हक किसी को किसने दिया।

स्वामी विवेकानंद का स्पष्ट मानना था कि भारतीय छात्राओं के लिए शिक्षा का स्वरूप भारतीय होना चाहिए। एक बार उन्होंने न्यूआर्क में भाषण के दौरान कहा था, मान्यवर मैं चाहता हूं कि मेरे देश की महिलाएं भी आपके देश की महिलाएं की तरह शिक्षित हो, उनके समान ही उनकी भी बौद्विक प्रगति हो, लेकिन मेरे देश की छात्राओं की शिक्षा अपने देश की संस्कृति के अनुसार हो, ऐसा मैं चाहता हूँ।

स्वामी विवेकानंद बालिका शिक्षा के प्रसार के लिए एक मठ स्थापित करना चाहते थे। वे मठ में ब्रह्मचारियों एवं ब्रह्मचारिणयों को नियुक्त करना चाहते थे। उनके अनुसार ब्रह्मचारी गाँव तथा समाज में जन शिक्षा तथा ब्रह्मचारणी बालिका शिक्षा का प्रसार करेगी। बालक तथा बालिकाओं के शिक्षा केन्द्रों में कोई अन्तर नही होगा। वे चाहते थे कि हर भारतीय के घर में उच्च आदर्श पहुंचे और बालक तथा बालिका अपने–अपने भविष्य के निर्माण में सक्षम हो। स्वामी जी चाहते थे कि हर भारतीय जीवन के गूढ़ प्रश्नों के उत्तर जाने, वे जाने की जीवन के बडे प्रश्नों के बारे में राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय विचारक क्या सोचते हैं।

विवेकानंद के अनुसार जो ब्रह्मचारिणी ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करेंगी वे ही इस मठ की शिक्षिका बनेगी तथा गाँव एवं शहर में शिक्षा केन्द्र खोलकर बालिका शिक्षा का प्रचार प्रसार का प्रयास करेंगी। जब इस कार्य के लिए उन्हें कोई योग्य महिला नहीं मिली क्योंकि उस समय भारत की अधिकांश महिलाएं निरक्षर थी, तब उन्होंने पत्र लिखकर अपनी शिष्या मार्गेट नोबल को बुलाया मार्गरेट नोबल लंदन के एक स्कूल की प्रधानाध्यापिका थी। विवेकानंद ने उनके स्कूल में प्रवचन दिया था। वे स्वामी जी से काफी प्रभावित थी। स्वामी जी ने उनसे कहा आज भारत में बालिका शिक्षा की बहुत आवश्यकता है। उन्होंने विवेकानंद का निमंत्रण स्वीकार किया। उनके भारत आगमन पर स्वामी जी ने उन्हें

ब्रह्मचर्य की दीक्षा दी तबसे उनका नाम निवेदिता हो गया। उन्हें ही आज हम सिस्टर निवेदिता के नाम से जानते है। जब वह भारत आई तब उनकी उम्र 28 वर्ष थी। तब से जीवन के अन्तिम क्षणों तक उन्होंने विवेकानंद के आह्वान पर अपना सम्पूर्ण जीवन भारतीय बालिकाओं को शिक्षित करने निवेदित कर दिया।

जब उनसे उनके एक शिष्य ने पूछा कि क्या विधवा महिलाओं को शादी करनी चाहिए तब विवेकानंद ने कहा यह मुझसे क्यों पूछते हो? ये उनका जीवन है उनका प्रश्न है, तुम उनके बारे में प्रश्न करने वाले कौन होते हो? तुम्हारा कार्य सिर्फ अपने घर की महिलाओं को अच्छी तरह शिक्षित करना है, फिर वे स्वयं निर्णय ले लेगी उनके लिए क्या सही है, और क्या गलत है और उनके जीवन मे किन सुधारों की आवश्यकता है। उन्होंने साफ शब्दों में पुरूष वर्गो को चेतावनी दी तुम होते कौन हो उनके जीवन में हस्तक्षेप करने वाले, तुम्हारा कर्तव्य सिर्फ उन्हें शिक्षित करने का है, तुम उनके भगवान बनने की कोशिश मत करो। उन्होंने अपने शिष्य से कहा आज समाज में जो विधवाएँ है उसका कारण बाल विवाह है साथ ही वे बालिकाओं की मृत्यु तथा दुर्बल बच्चे के जन्म का कारण भी बाल विवाह को मानते थे। बाल विवाह को स्वामी विवेकानन्द बालिकाओं के दुर्दशा का सबसे प्रमुख कारण मानते थे। वह चाहते थे भारतीय माता–पिता अपनी पुत्रियों की शादी पुत्रों के समान देर से करें।

विवेकानंद को विश्वास था कि यदि देश की बालिकाओं को सही तरीके से शिक्षित किया जाए तो वह अपनी सभी समस्याओं को स्वयं सुलझा लेगी। वे कहते थे देश की महिलाओं में काफी क्षमताएँ हैं अगर उन्हें जागृत किया जाए तो हमारे देश की लडकियाँ किसी भी देश की महिलाएँ से पीछे नहीं रहेगी।

बालिका शिक्षा पर स्वामी विवेकानन्द के विचारों की प्रासंगिकता वर्तमान संदर्भ में।

- वर्तमान समय में महिला सशक्तिकरण की बात कही जाती है ऐसा माना जाता है कि बिना महिला शिक्षा के राष्ट्र तथा समाज के विकास की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। वर्तमान समय में जो देश महिला शिक्षा की दृष्टि से जितना आगे है उसी देश को विकसित, विकासशील तथा ताकतवर माना जाता है। स्वामी विवेकानंद मनु महाराज के इस बात से सहमत थे यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः अर्थात जिस गृह में बालिकाओं की पूजा की जाती वहाँ देवता निवास करते है। उनका मानना था कि बिना बालिका शिक्षा के राष्ट्र और समाज का कल्याण हो रही नहीं सकता है। इस तरह बालिकाओं के लिए विवेकानंद की कही बाते वर्तमान समय में भी उतनी ही प्रासंगिक है। जितनी उस समय थी।
- स्वामी जी सिर्फ आधुनिक कपड़े पहनने तथा उपन्यास पढने को ही शिक्षा नहीं मानते थे बल्कि उनके अनुसार शिक्षा वह है जो लडकियों को निर्भय, निडर, आत्मनिर्भर स्वतंत्र, धार्मिक, चरित्रवान बनाए। वर्तमान महिला शिक्षा का उदेश्य भी महिलाओं को हिम्मती बनाना, उनका चरित्र गठन करना, तथा उन्हें व्यवसायिक रूप से आत्मनिर्भर बनाना है।
- स्वतंत्र भारत में बालिकाओं को मजबूत बनाने के लिए उनके शारीरिक मानसिक बौद्धिक आध्यात्मिक विकास के लिए उपयोगी शिक्षा की व्यवस्था की गई है। स्वामी जी भी बालक बालिकाओं के लिए समान शिक्षा की बात करते थे, और उनके अनुसार शिक्षा का उद्देश्य शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, नैतिक तथा आध्यात्मिक विकास करना है। वे खेल कूद, व्यायाम पर काफी बल देते थे। वर्तमान समय भारत की बालिकाएं खेल–कूद के क्षेत्र में देश विदेश में परचम लहरा रही है। स्वामी विवेकानंद के सपनों का भारत सरकार रूप ले रहा है।
- वर्तमान शिक्षा का एक उद्देश्य महिलाओं के योग्य माता, गृहणी, कार्यकर्ता बनाना तथा उनके स्त्रीत्व को बनाए रखना है, स्वामी विवेकानंद पूर्व और पश्चिम दोनों जगहों की महिलाओं का सम्मान करते थे। उनकी कई शिष्या पश्चिम देशों की थी। परन्तु वह भारतीय लड़कियों को संसार में सर्वश्रेष्ठ मानते थे। उनके सदगुणों की काफी

आदर करते थे, और शिक्षा के द्वारा उनके परम्परागत गुणों का बनाए रखने की बात करते थे। वर्त्तमान बालिक शिक्षा का उद्देश्य भी भारतीय छात्रओं में भारतीयता बनाए रखा है।

- उन्होंने कहा था देखना हमारे देश में महिलाओं का पुर्नजागरण होगा, फिर से विदुषी महिलाएं हर क्षेत्र में नेतृत्व करेगी। उनका यह विश्वास आज सही साबित हो रहा है। हमारे देश की महिलाएं देश दुनिया के हरेक क्षेत्रों में अपनी क्षमता का परचम लहरा रही है। यद्यपि उन्हें इस बात का डर भी था कि प0 शिक्षा और प0 संस्कृति से हमारे देश की बालिकाओं में कुछ दोष भी आ सकते है, स्वामी जी का यह डर भी वर्तमान समय में सही साबित हुआ है। लेकिन स्वामी जी हर चीज में साकारात्मकता देखते थे और उनका मानना था कि हर जगह गुण के साथ कुछ दोष भी है लेकिन जो चीज हमें आगे बढाती है उसके दोषों को नजरअंदाज कर आगे बढना चाहिए।

निष्कर्ष :–

अद्भूत व्यक्तित्व के धनी स्वामी विवेकानंद विलक्षण प्रतिभा के धनी युवा संत थे। 39 वर्ष 5 महीने और 24 दिन का उनका छोटा सा जीवन काल रहा है लेकिन इस छोटे से जीवन काल में ही अपने प्रभावशाली व्यक्तित्व और ओजस्वी विचार से राष्ट्रीय अंतर्राष्ट्रीय जगत को इतना प्रभावित किया कि उनका प्रभाव पूरे विश्व में आज तक है और आगे भी रहेगा।

स्वामी जी के जीवनकाल में भारत एक गुलाम तथा सामाजिक बुराईयों से जकड़ा हुआ देश था। भारत की दुर्दशा के अनके कारणों में एक बडा कारण वह देश में महिलाओं की दयनीय स्थिति को मानते थे। इसलिए उन्होंने देश की बालिकाओं को शिक्षित करना अपना परम कर्तव्य माना। उन्होंने भविष्य के भारत के लिए जो सपना देखा था, वह सशक्त भारत का सपना था। वे राष्ट्र निर्माण में युवाओं के महत्व को स्वीकार करते थे और उनके अनुसार बालिका शिक्षा के बिना देश और समाज कभी सशक्त हो ही नहीं सकता। इसलिए बालिका शिक्षा के संबंध में उन्होंने जो विचार प्रस्तुत किए वे आज भी उतनी ही प्रासंगिक है। स्वामी विवेकानंद लडकियों को निर्भय रहने, निडर बनने, अपना निर्णय खुद लेने, अपनी समस्याओं को खुद सुलझाने, आत्मनिर्भर बनने, चरित्रवान बनने, अपना कर्तव्यों का पालन करने, तेजस्विनी बनने तथा अपनी संस्कृति पर गर्व करने का जो मंत्र दिया वह आने वाली हर पीढी की बालिकाओं को सशक्त बनाने की दिशा में मार्गदर्शन करते रहेगी।

संदर्भ ग्रन्थ सूची :–

अनन्यानन्द स्वामी – विवेकानंद साहित्य, खण्ड (6) अद्धैत आश्रम

दंतेश्वरी जय मां – स्वामी विवेकानंद और नारी उत्थान

गम्भीरानन्द स्वामी – विवेकानंद साहित्य, खण्ड एक अद्धैत आश्रम

गुप्ता संध्या – स्वामी विवेकानंद के चिंतन में महिला सशक्तिकरण

निखिलानन्द स्वामी – विवेकानंद एक जीवनी, अद्धैत आश्रम

पाठक, पी.डी एवं मंडल के.पी–उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षा के आधार एवं विकास, अग्रवाल पब्लिकेशन्स

प्रो0 लाल रमन बिहारी–शिक्षा के दार्शनिक आधार–आर0लाल बुक डिपो

रोला रोमा– विवेकानंद, लोकभारती प्रकाशन

विवेकानंद स्वामी – भारतीय नारी (तृतीय संस्करण) श्री राम कृष्ण आश्रम

डॉ0 गोयल राज कुमार और डॉ0 अग्रवाल मीरा–लिंग विद्यालय और समाज, आर0 लाल बुक डिपो, मेरठ